PAPER NAME

??? ??? ?? ???? ????? ?? ??? ?????.pdf

AUTHOR

MAMTA KARVE

WORD COUNT

2504 Words

CHARACTER COUNT

8294 Characters

PAGE COUNT

7 Pages

FILE SIZE

562.3KB

SUBMISSION DATE

Mar 23, 2026 4:50 PM GMT+5:30

REPORT DATE

Mar 23, 2026 4:50 PM GMT+5:30

## 2% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

- 2% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 1% Submitted Works database

# लोक कला और ललित कलाओं के बीच संबंध

**MAMTA KARVE**[1]

Trained Graduate Teacher - Art Education,

(Kendriya Vidyalaya NHPC Sainj, Kullu , Himachal pin code-175134)

mamtakarve21@gmail.com

Contact no. 8858306564

## सारांश

कला ने मानव सभ्यता में भावनाओं, विश्वासों, परंपराओं और सामाजिक अनुभवों को व्यक्त करने के माध्यम के रूप में हमेशा एक केंद्रीय भूमिका निभाई है। कलात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों में, लोक कला और ललित कलाएँ दो महत्वपूर्ण कलात्मक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो इतिहास भर में विकसित हुई हैं। लोक कला सामुदायिक परंपराओं और रोजमर्रा की सांस्कृतिक प्रथाओं में गहराई से निहित है, जबकि ललित कलाएँ आमतौर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण, व्यक्तिगत रचनात्मकता और सौंदर्यबोध से जुड़ी होती हैं। यद्यपि कला के ये दोनों रूप अपनी विधियों, उद्देश्यों और संदर्भों में भिन्न हैं, फिर भी वे एक मजबूत और गतिशील संबंध साझा करते हैं। लोक परंपराओं ने कई ललित कलाकारों को प्रेरित किया है, जबकि ललित कलाओं ने लोक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के संरक्षण और पुनर्व्याख्या में योगदान दिया है। यह लेख लोक कला और ललित कलाओं के बीच संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विशेषताओं, समानताओं, भिन्नताओं और सांस्कृतिक महत्व की विस्तृत चर्चा के माध्यम से पड़ताल करता है। यह इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कैसे आधुनिक कलाकारों, संस्थानों और सांस्कृतिक आंदोलनों ने इन दोनों कलात्मक रूपों के बीच की सीमाओं को धुंधला कर दिया है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि लोक कला और ललित कलाओं के बीच की परस्पर क्रिया सांस्कृतिक निरंतरता, कलात्मक नवाचार और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

**शब्द कुंजिका**: लोक कला, ललित कला, सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक कला, दृश्य संस्कृति, कलात्मक अभिव्यक्ति, सामुदायिक कला।

## प्रस्तावना

कला मानवीय रचनात्मकता और सांस्कृतिक पहचान की सबसे मूलभूत अभिव्यक्तियों में से एक है। प्राचीन काल से ही, लोग अपनी भावनाओं, विश्वासों, परंपराओं और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और शिल्प जैसी कलात्मक विधाओं का उपयोग करते आए हैं। कला न केवल सौंदर्यबोध प्रदान करती है, बल्कि समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ को भी प्रतिबिंबित करती है। कलात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों में, लोक कला और ललित कला, दृश्य कला के क्षेत्र में दो महत्वपूर्ण श्रेणियां हैं। दोनों कलात्मक अभ्यास की विभिन्न परंपराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, फिर भी उनमें गहरे संबंध और परस्पर प्रभाव हैं। लोक कला से तात्पर्य समुदायों और आम लोगों द्वारा निर्मित पारंपरिक कला रूपों से है। यह सांस्कृतिक परंपराओं, अनुष्ठानों, त्योहारों और रोजमर्रा की जिंदगी से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। लोक कलाकार आमतौर पर औपचारिक शिक्षा के बजाय पारिवारिक परंपराओं या सामुदायिक प्रथाओं जैसे अनौपचारिक तरीकों से अपने कौशल सीखते हैं। दूसरी ओर, ललित कला उन कलात्मक अभ्यासों को संदर्भित करती है जो मुख्य रूप से सौंदर्यबोध, बौद्धिक अभिव्यक्ति और रचनात्मक प्रयोग से संबंधित हैं। इनमें चित्रकला, मूर्तिकला, रेखाचित्र और अन्य दृश्य कलाएं शामिल हैं जो आमतौर पर कला विद्यालयों और अकादमियों में सिखाई जाती हैं। यद्यपि ये दोनों विधाएं अलग-अलग प्रतीत होती हैं, फिर भी वे गहराई से परस्पर जुड़ी हुई हैं। इतिहास भर में, ललित कला कलाकारों ने लोक परंपराओं, रूपांकनों और तकनीकों से प्रेरणा ली है। इसी प्रकार, लोक कला ने ललित कला जगत से नए विचारों

और तकनीकों को अपनाकर विकास किया है। लोक कला और ललित कला के बीच संबंध को समझने से हमें कलात्मक परंपराओं की विविधता और कला द्वारा सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक परिवर्तन को प्रतिबिंबित करने के तरीकों को समझने में मदद मिलती है।

**लोक कला की अवधारणा और अर्थ**

लोक कला से तात्पर्य उन कलात्मक परंपराओं से है जो स्थानीय समुदायों में उत्पन्न होती हैं और पीढ़ियों से चली आ रही हैं। इनका निर्माण अक्सर स्व-शिक्षित कलाकारों द्वारा किया जाता है जो अवलोकन, अनुकरण और सांस्कृतिक सहभागिता के माध्यम से अपने कौशल को सीखते हैं। लोक कला उन लोगों के दैनिक जीवन, मान्यताओं, रीति-रिवाजों और परंपराओं को प्रतिबिंबित करती है जो इसे बनाते हैं। ललित कलाओं के विपरीत, जो अक्सर व्यक्तिगत रचनात्मकता पर केंद्रित होती हैं, लोक कला सामूहिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। लोक कला के सामान्य रूपों में शामिल हैं:

- पारंपरिक चित्रकला
- मिट्टी के बर्तन बनाना
- वस्त्र डिजाइन
- कढ़ाई
- लकड़ी की नक्काशी
- सजावटी शिल्प
- दीवार चित्रकारी
- मुखौटे बनाना

ये कलाकृतियाँ अक्सर त्योहारों, अनुष्ठानों, धार्मिक समारोहों और घरेलू सजावट से जुड़ी होती हैं। लोक कला की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय परंपराओं से इसका गहरा जुड़ाव है। लोक कलाकार अक्सर प्रकृति, पौराणिक कथाओं, कृषि, पशु और सामाजिक जीवन से संबंधित विषयों को चित्रित करते हैं। भारत में, लोक कला की एक समृद्ध और विविध परंपरा है। उदाहरणों में शामिल हैं:

- बिहार की मधुबनी चित्रकला
- महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला
- मध्य प्रदेश की गोंड चित्रकला
- ओडिशा और पश्चिम बंगाल की पट्टाचित्र
- आंध्र प्रदेश की कलमकारी
- राजस्थान की फड़ चित्रकला

ये कलात्मक परंपराएं विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता को दर्शाती हैं।

## ललित कला की अवधारणा और अर्थ

ललित कला से तात्पर्य दृश्य कला रूपों से है जो मुख्य रूप से सौंदर्यबोध और बौद्धिक अन्वेषण के लिए रचित होते हैं। लोक कला के विपरीत, जो सामुदायिक परंपराओं से घनिष्ठ रूप से जुड़ी होती है, ललित कला व्यक्तिगत रचनात्मकता, नवाचार और कलात्मक प्रयोग पर बल देती है। ललित कला में विभिन्न विधाएँ शामिल हैं जैसे:

- चित्रकला
- मूर्तिकला
- चित्रकला
- मुद्रण कला
- वास्तुकला
- फोटोग्राफी
- इंस्टॉलेशन कला
- डिजिटल कला

ललित कलाकार आमतौर पर कला विद्यालयों, विश्वविद्यालयों या अकादमियों में औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। वे कला इतिहास, कलात्मक तकनीकों और सैद्धांतिक अवधारणाओं का अध्ययन करते हैं जो उनकी रचनात्मक प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। ललित कला का मुख्य उद्देश्य आवश्यक रूप से व्यावहारिक उपयोगिता नहीं है, बल्कि कलात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध का अनुभव है। ललित कला कृतियों को आमतौर पर दीर्घाओं, संग्रहालयों और प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जाता है जहाँ उन्हें व्यापक दर्शकों द्वारा सराहा जाता है। ललित कला सांस्कृतिक विमर्श को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कलाकार अक्सर अपनी कृतियों का उपयोग दार्शनिक विचारों, सामाजिक मुद्दों और राजनीतिक विषयों का अन्वेषण करने के लिए करते हैं। समय के साथ, ललित कलाएं पुनर्जागरण कला, प्रभाववाद, आधुनिकतावाद और समकालीन कला जैसे विभिन्न कलात्मक आंदोलनों के माध्यम से विकसित हुई हैं।

## लोक कला और ललित कला का ऐतिहासिक विकास

लोक कला और ललित कला दोनों की उत्पत्ति प्राचीन सभ्यताओं से मानी जा सकती है। प्रारंभिक मानव समाजों ने गुफा चित्रों, मिट्टी के बर्तनों की सजावट और अनुष्ठानिक वस्तुओं के रूप में कलात्मक अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं। इस प्रारंभिक काल में, कला के विभिन्न रूपों में बहुत कम अंतर था। कलात्मक गतिविधियाँ दैनिक जीवन और सांस्कृतिक प्रथाओं में समाहित थीं। जैसे-जैसे समाज विकसित हुए, कलात्मक प्रथाएँ धीरे-धीरे अधिक विशिष्ट होती गई। पेशेवर कलाकार उभरने लगे और संस्थाओं ने कला की विभिन्न श्रेणियों में अंतर करना शुरू कर दिया। मध्ययुग में, ललित कलाओं का विकास अक्सर राजाओं, धार्मिक संस्थाओं और धनी संरक्षकों के संरक्षण में हुआ। कलाकारों को मंदिरों, गिरजाघरों और महलों के लिए चित्र, मूर्तियाँ और स्थापत्य कृतियाँ बनाने का कार्य सौंपा जाता था। उसी समय, लोक कला ग्रामीण समुदायों में फलती-फूलती रही, जहाँ लोग सांस्कृतिक और व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए सजावटी वस्तुएँ, वस्त्र और चित्र बनाते थे। भारत में, मंदिर भित्ति चित्र, लघु चित्र और शास्त्रीय मूर्तियाँ ललित कलाओं के विकास का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस बीच, ग्रामीण समुदायों ने जीवंत लोक कला परंपराओं को बनाए रखा। आधुनिक युग में, विद्वानों और कला इतिहासकारों ने लोक कला के कलात्मक महत्व को पहचानना शुरू किया। कई संग्रहालयों और सांस्कृतिक संस्थानों ने लोक

कलाकृतियों का संग्रह और संरक्षण करना शुरू कर दिया। इस पहचान ने लोक कला और ललित कलाओं के बीच की खाई को पाटने में मदद की।

**लोक कला की विशेषताएं**

लोक कला में कई विशिष्ट विशेषताएं हैं जो इसे कला के अन्य रूपों से अलग करती हैं।

**सामुदायिक सृजन**

लोक कला का सृजन पेशेवर कलाकारों के बजाय समुदाय के सदस्यों द्वारा किया जाता है। यह साझा सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को प्रतिबिंबित करती है।

**पारंपरिक तकनीकें**

लोक कला में प्रयुक्त कौशल आमतौर पर अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं।

**कार्यात्मक उद्देश्य**

कई लोक कलाकृतियाँ घरों, कपड़ों या घरेलू वस्तुओं को सजाने जैसे व्यावहारिक कार्यों को पूरा करती हैं।

**स्थानीय सामग्रियों का उपयोग**

लोक कलाकार अक्सर स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों जैसे मिट्टी, प्राकृतिक रंगों, लकड़ी और कपड़े का उपयोग करते हैं।

**प्रतीकात्मकता**

लोक कला में अक्सर धर्म, पौराणिक कथाओं, प्रकृति और सांस्कृतिक मान्यताओं से संबंधित प्रतीकात्मक तत्व शामिल होते हैं।

**ललित कलाओं की विशेषताएं**

ललित कलाओं की कुछ विशिष्ट विशेषताएं भी हैं जो उनके कलात्मक स्वरूप को परिभाषित करती हैं।

**व्यक्तिगत रचनात्मकता**

ललित कलाएं व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और मौलिकता पर बल देती हैं।

**औपचारिक प्रशिक्षण**

कलाकार आमतौर पर कलात्मक तकनीकों और कला इतिहास में व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करते हैं।

**सौंदर्यपरक केंद्र बिंदु**

ललित कलाओं का प्राथमिक उद्देश्य कार्यात्मक उपयोग के बजाय सौंदर्यबोध की सराहना करना है।

**कलात्मक नवाचार**

ललित कलाकार अक्सर नई सामग्रियों, शैलियों और अवधारणाओं के साथ प्रयोग करते हैं।

**संस्थागत मान्यता**

ललित कलाकृतियां आमतौर पर दीर्घाओं, संग्रहालयों और प्रदर्शनियों में प्रदर्शित की जाती हैं।

**लोक कला और ललित कला में समानताएँ**

अपनी भिन्नताओं के बावजूद, लोक कला और ललित कला में कई महत्वपूर्ण समानताएँ हैं।

**रचनात्मक अभिव्यक्ति**

दोनों कला विधाएँ मानवीय रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का प्रतिनिधित्व करती हैं।

**सांस्कृतिक प्रतिबिंब**

दोनों कलाएँ समाज के सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और मान्यताओं को दर्शाती हैं।

**कलात्मक तत्व**

दोनों कलाएँ रेखा, रंग, आकार, बनावट और संयोजन जैसे तत्वों का उपयोग करती हैं।

**कथावाचन**

दोनों विधाओं की कई कलाकृतियाँ पौराणिक कथाओं, इतिहास और दैनिक जीवन से संबंधित कहानियों को दर्शाती हैं।

**भावनात्मक संचार**

दोनों कला विधाओं में दर्शकों से भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने की क्षमता होती है।

**लोक कला और ललित कला के बीच अंतर**

यद्यपि इनमें कुछ समानताएँ हैं, फिर भी इनमें महत्वपूर्ण अंतर मौजूद हैं। ये अंतर प्रत्येक कलात्मक परंपरा की अनूठी प्रकृति को उजागर करते हैं।

| **पहलू** | **लोक कला** | **ललित कला** |
|---|---|---|
| कलाकार | सामुदायिक या स्व-शिक्षित कलाकार | पेशेवर रूप से प्रशिक्षित कलाकार |
| उद्देश्य | सांस्कृतिक और कार्यात्मक | सौंदर्यपरक और बौद्धिक |
| सीखना | अनौपचारिक परंपरा | औपचारिक शिक्षा |
| सामग्री | स्थानीय और प्राकृतिक | विविध कलात्मक सामग्रियाँ |
| दर्शक | स्थानीय समुदाय | वैश्विक कला दर्शक |

Source: compilation by Author

**ललित कलाओं पर लोक कला का प्रभाव**

लोक कला ने कई ललित कलाकारों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पारंपरिक पैटर्न, रूपांकन और कथा कहने की तकनीकें आधुनिक और समकालीन कला को प्रभावित करती हैं। कई कलाकार सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने और पारंपरिक कलात्मक प्रथाओं से जुड़ने के लिए अपनी कृतियों में लोक तत्वों को शामिल करते हैं। उदाहरण के लिए, पशु, पौधे, ज्यामितीय आकृतियाँ और पौराणिक आकृतियाँ जैसे लोक रूपांकन अक्सर आधुनिक चित्रों और मूर्तियों में दिखाई देते हैं। लोक कला फैशन डिजाइन, ग्राफिक डिजाइन और आंतरिक सज्जा जैसे क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है। लोक परंपराओं को ललित कलाओं में एकीकृत करके, कलाकार सांस्कृतिक ज्ञान को संरक्षित करने में मदद करते हैं और साथ ही इसे व्यापक दर्शकों तक पहुंचाते हैं।

**लोक कला पर ललित कलाओं का प्रभाव**

लोक कला और ललित कलाओं के बीच पारस्परिक संबंध है। ललित कलाओं ने लोक कला के विकास को भी प्रभावित किया है। आधुनिक शिक्षा, सरकारी पहलों और सांस्कृतिक संगठनों ने लोक कलाकारों को नई तकनीकें और सामग्रियां सीखने के अवसर प्रदान किए हैं। प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और कला बाजारों में भाग लेने से कई लोक कलाकारों को नई शैलियों और विषयों के साथ प्रयोग करने की प्रेरणा मिली है। परिणामस्वरूप, समकालीन लोक कला में अक्सर पारंपरिक रूपांकनों को आधुनिक कलात्मक दृष्टिकोणों के साथ संयोजित किया जाता है। इस परस्पर क्रिया ने आधुनिक दुनिया में लोक कला को बनाए रखने में मदद की है।

**सांस्कृतिक पहचान में लोक कला और ललित कला की भूमिका**

लोक कला और ललित कला दोनों ही सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। लोक कला पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक मूल्यों और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को संरक्षित करती है। यह सांस्कृतिक विरासत का दृश्य प्रतिनिधित्व करती है। दूसरी ओर, ललित कला बौद्धिक अन्वेषण और रचनात्मक प्रयोग के लिए एक मंच प्रदान करती है। कलाकार अक्सर अपनी कलाकृतियों के माध्यम से सामाजिक मुद्दों, राजनीतिक विषयों और दार्शनिक प्रश्नों को संबोधित करते हैं। ये दोनों कला विधाएँ मिलकर समाजों को परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करती हैं। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से विविध देशों में, लोक कला और ललित कला दोनों ही राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक विविधता के प्रतिनिधित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

**लोक कला और ललित कला की समकालीन प्रासंगिकता**

समकालीन समाज में, लोक कला और ललित कला के बीच का अंतर धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। कई आधुनिक कलाकार पारंपरिक लोक तत्वों को समकालीन कलात्मक प्रथाओं में शामिल कर रहे हैं। संग्रहालय और गैलरी लोक कला के कलात्मक मूल्य को तेजी से पहचान रहे हैं और इसे ललित कलाओं के साथ प्रदर्शित कर रहे हैं। वैश्वीकरण और डिजिटल प्रौद्योगिकी ने भी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लोक परंपराओं के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है। ऑनलाइन बाज़ार, सोशल मीडिया और सांस्कृतिक उत्सव लोक कलाकारों को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचने का अवसर प्रदान करते हैं। ये विकास दर्शाते हैं कि लोक कला और ललित कला व्यापक कलात्मक परिदृश्य के परस्पर जुड़े हुए भाग हैं।

**निष्कर्ष**

लोक कला और ललित कलाओं का संबंध जटिल, गतिशील और परस्पर प्रभावशाली है। लोक कला समुदायों की सामूहिक सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि ललित कलाएं व्यक्तिगत रचनात्मकता और सौंदर्यबोध पर बल देती हैं। अपनी भिन्नताओं के बावजूद, दोनों कला विधाएं मानवीय रचनात्मकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की एक समान नींव साझा करती हैं। इतिहास भर में, लोक कला ने अपने समृद्ध प्रतीकों, पारंपरिक रूपांकनों और सांस्कृतिक कथाओं के माध्यम से ललित कलाकारों को प्रेरित किया है। वहीं, ललित कलाओं ने लोक परंपराओं की पहचान, संरक्षण और रूपांतरण में योगदान दिया है। आधुनिक जगत में, इन दोनों कला विधाओं का अंतर्संबंध निरंतर विकसित हो रहा है। समकालीन कलाकार अक्सर पारंपरिक और आधुनिक तत्वों का मिश्रण करते हुए कलात्मक अभिव्यक्ति के नवीन रूप सृजित करते हैं। लोक कला और ललित कलाओं के बीच संबंध को समझने से हमें कलात्मक परंपराओं की विविधता और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के महत्व को समझने में मदद मिलती है। अंततः, लोक कला और ललित कलाएं दोनों ही मानव सभ्यता के आवश्यक घटक हैं, जो विश्वभर के समाजों की रचनात्मकता, इतिहास और सांस्कृतिक पहचान को प्रतिबिंबित करती हैं।

**संदर्भ सूची**


**आर्चर, डब्ल्यू. जी.** (1972). भारतीय लोक चित्रकला। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (पृष्ठ 15–42)

**भरूचा, आर.** (2003). सांस्कृतिक अभ्यास की राजनीति: वैश्वीकरण के युग में रंगमंच के माध्यम से चिंतन। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (पृष्ठ 120–135)

चंद्र, पी. (1993). भारतीय कला में अध्ययन। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (पृष्ठ 140–165)

**चिल्वर्स, आई.** (2015). कला और कलाकारों का ऑक्सफोर्ड शब्दकोश (चौथा संस्करण)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (पृष्ठ 210–215)

**कुमारस्वामी, ए. के.** (1956). कला में प्रकृति का रूपांतरण। डोवर पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ 120–145)

**डालमिया, वाई.** (2012). वारली जनजाति की चित्रित दुनिया: महाराष्ट्र की वारली जनजाति की कला और अनुष्ठान। मैपिन पब्लिशिंग। (पृष्ठ 75–98)

**धामिजा, जे.** (1992). भारतीय लोक कला और शिल्प। नेशनल बुक ट्रस्ट। (पृष्ठ 12–40)

**डिसनायके, ई.** (1995). होमो एस्थेटिकस: कला कहाँ से आती है और क्यों। यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस। (पृष्ठ 150–175)

**गोम्ब्रिच, ई. एच.** (1995). कला की कहानी (16वां संस्करण)। फाइडॉन प्रेस। (पृष्ठ 5–20)

**ग्रैबर्न, एन. एच. एच.** (1976). जातीय और पर्यटन कला: चौथी दुनिया से सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस। (पृष्ठ 1–25)

**जैन, जे., और अग्रवाल, ए.** (2000). मधुबनी चित्रकला। मैपिन पब्लिशिंग। (पृष्ठ 18–45)

**क्रामरिश, एस.** (1983). भारत की कला: भारतीय मूर्तिकला, चित्रकला और वास्तुकला की परंपराएँ। फ़ाइडन प्रेस। (पृष्ठ180–210)

## 2% Overall Similarity

Top sources found in the following databases:

- 2% Internet database
- Crossref database
- 1% Submitted Works database
- 0% Publications database
- Crossref Posted Content database

### TOP SOURCES

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

| # | Source | Type | Similarity |
|---|---|---|---|
| 1 | digital.lib.usu.edu | Internet | <1% |
| 2 | hindikiduniya.com | Internet | <1% |
| 3 | en.stonecrusher.co.in | Internet | <1% |
| 4 | healthunbox.com | Internet | <1% |